## विचार प्रवाह

# यांत्रिक भाषा के खोल में सिसकती संवेदनाएं

सभ्यता के भोर में मनुष्य ने गुफाओं की उदास, पथरीली दीवारों पर जब पशु-पक्षियों के चित्र उकेरे थे, तब उसके पास भाषा नहीं थी, केवल अपनी पहचान चिह्नित करने की एक छटपटाहट भरी आकांक्षा थी।

समय चक्र चलता रहा - युग बीते, वाक्य की देवी अवतरित हुई, संस्कृतियों ने जन्म लिया और मनुष्य ने अपने मन की अनंत भावनाओं सुख-दुख, विरह और अनुराग को व्यक्त करने के लिए शब्दों का आविष्कार किया। शब्दों ने उसकी संवेदनाओं को विस्तार दिया ङ्क बाल्मीकि ने राम कथा लिखी,कालिदास ने मेघों को दूत बनाया और गालिब ने दिल की नाजुक परतों को शब्द दिए। इस तरह भाषा को उच्च आयाम मिले।

आज, मनुष्य के पास संवाद के अब तक के सबसे तेज़ और सुविधाजनक साधन हैं, सदेश क्षण भर में पहुँच जाते हैं, प्रतिक्रियाएँ तत्क्षण मिल जाती हैं, किंतु एक प्रश्न रह-रहकर सिर उठाता है कि क्या हमारी भावनाएं भी उतनी ही सहजता से एक-दूसरे तक पहुँच रहे हैं? हमारी उँगलियाँ पहले से अधिक सक्रिय हैं, पर क्या संवेदनाएँ भी उतनी ही जाग्रत हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि अभिव्यक्ति की बढ़ती सुविधा ने अनुभूति के धैर्य को ही संकुचित करना शुरू कर दिया है?

सोशल मीडिया पर सदेश पढ़ते हुए मुझे ?कई बार ऐसा लगता है कि विकास के शीर्ष पर बैठा इक्कीसवीं सदी का मनुष्य पुनः उसी प्रागैतिहासिक गुफा में लौट रहा है - अंतर बस इतना है कि इस बार दीवारें पाषाण की नहीं, चमकदार नीली स्क्रीनों की हैं, और चित्र उकेरे नहीं जा रहे, बल्कि अंगूठे के एक स्पर्श मात्र से सेंड किए जा रहे हैं।

क्या यह सच नहीं कि ?आज भाषा का विशाल, समृद्ध प्रांगण सिमटकर कुछ पीली बिंदियों और बहुरंगी प्रतीकों की परिधि में क़ैद हो रहा है? संवेदनाएँ, जो कभी शब्दों की मखमली छुअन से जीवंत होती थीं,



अब इमोजी के खोल में दम तोड़ रही हैं।

आज स्थिति यह है कि ?जब किसी आत्मीय के जीवन में शोक का अंधकार घिरता है, तो अब सांत्वना के खेह और भावपूर्ण दो शब्द नहीं लिखे जाते हैं,उसकी जगह स्क्रीन पर टिमटिमाता है ङ्क एक रोता हुआ पीला चेहरा या जुड़े हुए दो हाथ! क्या संवेदना का कोई भार, कोई घनत्व अभी बचा है? दुःखातिरेक की उस गहन स्तब्धता को तीन या चार रंगीन प्रतीकों से तौल देना मनुष्य की संवेदना, भाषाई सौंदर्य और सामर्थ्य की जघन्य हत्या नहीं तो और क्या है?

कृतज्ञता अब हाथ जोड़ने वाले चिन्ह की मोहताज़ है, और आँखों से बहते आँसुओं वाले हँसते चेहरे ने उल्लास को बंधक बना लिया है, और स्नेह तो उड़ती हुई चुंबन के स्टीकर में सिमट गया है।

जन्मदिन हो या कोई त्योहार, अब शुभकामनाएं भी कॉपी-पेस्ट के कारखाने से बनकर आती हैं। एक ही सजावटी संदेश पचास लोगों को फॉरवर्ड कर दिया जाता है। न भेजने वाले का भाव उपस्थित है और पाने वाले का उल्लास ; बस एक यांत्रिक चक्र पूरा हो रहा है।

तकनीक ने संसार को हमारी उँगलियों तक पहुँचा दिया है; अब चुनौती यह है कि संसार की इस निकटता में मनुष्य एक-दूसरे से दूर न हो जाएँ। क्योंकि भाषा का सौंदर्य उसकी चमक में नहीं, उस अनुभूति में है जो शब्दों के माध्यम से एक हृदय से दूसरे हृदय तक पहुँचती है।

किसी मनीषी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि हम भाषा को समृद्ध करते-करते अचानक उसे इतना दरिद्र बना बैठेंगे। आज हम भूल रहे हैं कि शब्द केवल अक्षरों का समूह नहीं होते; उनमें एक संवेदनाओं की गर्माहट होती है, एक स्पंदन होता है, बोलने वाले की सांसों की महक होती है। जब हम किसी को लिखते हैं - मैं तुम्हारे साथ हूँ, तो उन शब्दों में आत्मीयता और विश्वास का एक पूरा भूगोल बसा होता है, जिसे कोई भी पीला प्रतीक कभी प्रतिस्थापित नहीं कर सकता है क्योंकि मनुष्य की चेतना का संपूर्ण सौंदर्य उसकी सहजता में होता है। जब भावों का निर्झर भीतर फूटता है, तो शब्द स्वयं अपना मार्ग चुन लेते हैं - कभी गदगद कंठ की थरथराहट बनकर, तो कभी आंसुओं से भीगी किसी पाती की स्याही बनकर। अगली बार जब आप किसी अपने के लिए मन का द्वार खोलें, तो कृपा करके इन निष्प्राण, पीले प्रतीकों को थोड़ा विश्राम दीजिएगा और अपनी उंगलियों का सदुपयोग कीजिए, शब्दों को चुनिए, अपनी संवेदना को जीवंत होने का अवसर दीजिए, संवेदना ही संबंधों की गर्माहट को रक्षित करेगी।

– डॉ स्नेहलता श्रीवास्तव

## पंडित कृपाशंकर शुक्ला का जन्मदिवस 6 नवम्बर को मनेगा

**इन्दौर।** सुरेश सेठ विचार मंच के अध्यक्ष डॉ. कमल कुमार साबू ने बताया है कि शहर के कांग्रेसी नेता, बच्चों के चाचा, आईडीए के पूर्व अध्यक्ष पं. कृपाशंकर शुक्ला के 85 वर्ष पूर्ण होने पर 6 नवम्बर को सेवा दिवस के रूप में शहर में विभिन्न कार्यक्रम होंगे। अनेकों देवस्थानों पर धार्मिक पुस्तकों का निःशुल्क वितरण होगा तथा पंडितजी के दीर्घायु होने हेतु प्रार्थना सभा हनुमान मंदिर फूटी कोठी पर होगी। सांई प्रचार मिशन की महिला संयोजिका दर्पणा काम्बले, सांई भक्त कमल साबू, कांग्रेसी नेता मनोज तोमर, राजेन्द्र भावसार, एडवोकेट सत्यनारायण शर्मा, पत्रकार बाबूभाई पंवार, साहित्यकार नयन राठी ने कार्यक्रम सफल बनाने का आव्हान किया है।




– मध्यप्रदेश में पीएमएवाय-शहरी 2.0 के लिए नई आवास नीति का मसौदा तैयार, एफएआर बढ़ाने और शुल्कों में रियायत का प्रस्ताव

# सस्ते घरों के लिए निजी बिल्डरों को मिलेगी छूट

**इन्दौर।** शहरों में बढ़ती आबादी और महंगे होते मकानों के बीच मध्यप्रदेश सरकार अब किफायती आवास निर्माण के लिए निजी क्षेत्र को बड़ी भूमिका देने की तैयारी में है। प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) 2.0 के उद्देश्यों के अनुरूप सरकार नई शहरी किफायती आवास एवं पर्यावास नीति ला रही है।

इसके प्रारूप में निजी बिल्डरों को एफएआर (फ्लोर एरिया रेशियो) में छूट, निर्माण संबंधी शुल्कों में रियायत और मंजूरियों की प्रक्रिया आसान करने जैसे प्रावधान प्रस्तावित किए गए हैं। साथ ही सरकारी जमीन के बेहतर उपयोग और सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के जरिए आवास परियोजनाओं में निवेश बढ़ाने की योजना है।

सरकार ने नीति का प्रारूप जारी कर दिया है और इस पर विशेषज्ञों के साथ आम नागरिकों से भी सुझाव मांगे हैं। सुझावों के आधार पर नीति को अंतिम रूप दिया जाएगा। सरकार का मकसद केवल आवासों की संख्या बढ़ाना नहीं, बल्कि आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग और कम आय वाले परिवारों के लिए ऐसे मकान उपलब्ध कराना है, जिन्हें वे अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार खरीद सकें।

**बिल्डरों को रियायत देकर सस्ते मकानों का रास्ता**

नई नीति में निजी डेवलपर्स को किफायती आवास परियोजनाओं के लिए प्रोत्साहित करने पर जोर है। इसके लिए एफएआर बढ़ाने और विभिन्न शुल्कों में छूट देने का प्रस्ताव है। एफएआर बढ़ने से बिल्डर उपलब्ध जमीन पर अधिक निर्माण कर सकेंगे। इससे परियोजनाओं की लागत और आवासों की कीमत को नियंत्रित करने में मदद मिलने की उम्मीद है। इसके अलावा भवन निर्माण और परियोजनाओं की स्वीकृति से जुड़ी प्रक्रियाओं को सरल बनाने की तैयारी है। नियामकीय सुधारों के माध्यम से मंजूरियों में लगने वाला



समय कम करने का लक्ष्य रखा गया है। सरकार मान रही है कि निजी निवेशकों को प्रोत्साहन मिलने से किफायती आवासों की आपूर्ति बढ़ सकती है।

**सरकारी जमीन का होगा बेहतर इस्तेमाल**

किफायती आवास परियोजनाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती जमीन की उपलब्धता है। शहरों में जमीन महंगी होने के कारण कम कीमत वाले मकान बनाना डेवलपर्स के लिए मुश्किल होता है। इसे देखते हुए नीति में शासकीय भूमि के बेहतर उपयोग का प्रस्ताव रखा गया है। इसके साथ टाउन प्लानिंग स्कीम और विकास अधिकारों के हस्तांतरण (टीडीआर) जैसे विकल्पों का इस्तेमाल किया जाएगा। इन व्यवस्थाओं के जरिए आवासीय परियोजनाओं के लिए जमीन उपलब्ध कराने और नियोजित शहरी विकास को गति देने की कोशिश होगी।

**पीपीपी मॉडल से निजी निवेश को बढ़ावा**

सरकार आवास निर्माण में सार्वजनिक-निजी भागीदारी को भी महत्वपूर्ण माध्यम बनाना चाहती है। इस मॉडल में सरकार जमीन और नीतिगत सुविधाएं उपलब्ध कराने में भूमिका निभा सकती है, जबकि निजी क्षेत्र निर्माण और निवेश में भागीदारी करेगा। इससे सरकारी संसाधनों पर पूरा वित्तीय भार डाले बिना अधिक आवासीय परियोजनाएं शुरू करने की संभावना बनेगी। हालांकि, इन परियोजनाओं में मकानों की कीमत और पात्र हितग्राहियों तक उनकी पहुंच सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण होगा।

**एक पोर्टल पर मिलेंगी मंजूरियां**

नीति में एकीकृत डिजिटल पोर्टल विकसित करने का भी प्रस्ताव है। इसके माध्यम से आवास परियोजनाओं से जुड़ी प्रक्रियाओं और स्वीकृतियों की स्थिति ऑनलाइन देखी जा सकेगी। इससे अलग-अलग विभागों में फाइलों के चक्कर लगाने की जरूरत कम होगी और परियोजनाओं को समय पर मंजूरी मिल सकेगी। डिजिटल व्यवस्था से पारदर्शिता बढ़ाने के साथ डेवलपर्स और आवास के इच्छुक लोगों को भी प्रक्रियाओं की जानकारी एक ही स्थान पर उपलब्ध कराने का लक्ष्य है।

**बढ़ते शहरीकरण ने बढ़ाई आवास की जरूरत**

मध्यप्रदेश के शहरों में रोजगार, उद्योग और कारोबार के अवसर बढ़ने के साथ ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले लोगों की संख्या भी बढ़ रही है। इसके चलते किफायती मकानों की मांग लगातार बढ़ रही है। खासतौर पर आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग और निम्न आय वर्ग के परिवारों के लिए शहरों में अपना घर खरीदना चुनौती बना हुआ है। नई नीति इसी जरूरत को ध्यान में रखकर तैयार की जा रही है। अब सुझावों के बाद अंतिम नीति में यह स्पष्ट होगा कि निजी बिल्डरों को किस तरह की रियायतें मिलेंगी, सरकारी जमीन का उपयोग कैसे होगा और पात्र परिवारों को आवास उपलब्ध कराने की व्यवस्था किस रूप में लागू की जाएगी।

# इंदौर डाक-तार सहकारी संस्था ने 3000 सदस्यों का किया सम्मान

इंदौर डाक-तार सहकारी संस्था ने अपने सदस्यों के सम्मान में भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया । समारोह में लगभग 3000 सदस्य एकत्रित हुए, जो सहकारिता के क्षेत्र में अपने आप में एक अनुपम और ऐतिहासिक उदाहरण है। विशेष बात यह रही कि 60 से 93 वर्ष तक की आयु के संस्था के वरिष्ठ सदस्य भी बड़ी संख्या में उपस्थित हुए।



प्रत्येक सदस्य का संस्था अध्यक्ष श्री होरा जी एवं संचालक मंडल के सदस्यों ने शाल एवं माला पहनाकर आत्मीय स्वागत और सम्मान किया। वरिष्ठ सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि संस्था ने अपने प्रत्येक सदस्य को याद कर उन्हें सम्मान देने का जो प्रयास किया है, वह अत्यंत सराहनीय और गौरवपूर्ण है ।

समारोह में उपस्थित सदस्यों ने संस्था अध्यक्ष आर.एस. होरा की कार्यशैली, सक्रियता एवं सदस्यों के प्रति उनके आत्मीय व्यवहार की जमकर प्रशंसा की । मनमोहन झांझरी व सुनील फणसे ने बातायाकि इस अवसर पर गुरुद्वारा प्रबंध कमेटी के प्रमुख पदाधिकारी भी उपस्थित थे । पूर्व पार्षद सुरेंद्र सिंह छाबड़ा को विशेष रूप से आमंत्रित कर उनका सम्मान किया गया। वहीं सहकारिता विभाग से पधारे राजकुमार देवकर का संचालक मंडल द्वारा स्वागत किया गया । इस अवसर पर वरिष्ठ सदस्य एवं सोसायटी के पूर्व अध्यक्ष प्रकाश शर्मा , हेमंत दुबे , प्रेम तिवारी , एम एल चौधरी , सुंदरलाल , नरेंद्र राठौर , सी के जोशी ने हौसला बढ़ाया ।

# सिख एवं सिंधी विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क करियर काउंसलिंग का आयोजन



**इंदौर।** विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए सही करियर दिशा प्रदान करने तथा आधुनिक तकनीक एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रति जागरूक बनाने के उद्देश्य से MPCG केंद्रीय श्री गुरु सिंह सभा के अध्यक्ष सरदार हरपाल सिंह भाटिया के नेतृत्व में इंदौर में सिख एवं सिंधी समाज के विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क करियर काउंसलिंग एवं AI वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस विशेष कार्यक्रम में कुल 1150 विद्यार्थियों ने पंजीयन कराया । इस अवसर पर सरदार हरपाल सिंह भाटिया ने कहा कि समाज के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सही करियर मार्गदर्शन और आधुनिक तकनीक का ज्ञान उपलब्ध कराना समय की आवश्यकता है। प्रतिभा की कमी नहीं होती, आवश्यकता होती है उसे सही दिशा और उचित अवसर प्रदान करने की। इसी उद्देश्य से MPCG केंद्रीय श्री गुरु सिंह सभा द्वारा विद्यार्थियों के लिए यह संपूर्ण कार्यक्रम निःशुल्क आयोजित किया गया, ताकि आर्थिक परिस्थितियां किसी भी विद्यार्थी के भविष्य की राह में बाधा न बनें। कार्यक्रम में प्रसिद्ध करियर काउंसलर डॉ. अमृता दास एवं उनकी विशेषज्ञ काउंसलिंग टीम ने विद्यार्थियों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान किया। डॉ. अमृता दास ने अपने विशेष प्रेजेंटेशन के माध्यम से करियर काउंसलिंग के महत्व पर विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि आज के प्रतिस्पर्धात्मक दौर में केवल अच्छे अंक प्राप्त करना ही सफलता की गारंटी नहीं है, बल्कि प्रत्येक विद्यार्थी की रुचि, योग्यता, क्षमता और व्यक्तित्व के अनुरूप सही करियर का चुनाव करना अत्यंत आवश्यक है।

# कुलश्रेष्ठ शर्मा की पंक्तियों ने दर्शकों को सोचने पर किया मजबूर




इंदौर। इंदौर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी द्वारा फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया के तत्वावधान में अध्यक्ष डॉ. मोंटू पटेल एवं उपाध्यक्ष श्री जसु भाई चौधरी के निर्देशन में 31 अक्टूबर 2026 को ग्राम कालाकुंड में एंटी माइक्रोबियल रेजिस्टेंस के प्रति जनजागरूकता हेतु नुक्कड़ नाटक एवं रैली का आयोजन किया गया।

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से विद्यार्थियों ने बताया कि बिना योग्य चिकित्सक की सलाह के एंटीबायोटिक दवाओं का अनुचित उपयोग किस प्रकार बैक्टीरिया में दवाओं के प्रति प्रतिरोध उत्पन्न कर सकता है और भविष्य में गंभीर संक्रमण का उपचार कठिन बना सकता है। नाटक ने ग्रामीणों को दवाओं के जिम्मेदार उपयोग के प्रति जागरूक किया। नाटक की पटकथा लेखक एवं सूत्रधार कुलश्रेष्ठ शर्मा ने अपनी लेखनी और प्रभावशाली प्रस्तुति से वैज्ञानिक विषय को सरल भाषा में जनसामान्य तक पहुंचाया। नाटक के अंत में उनकी भावपूर्ण पंक्तियों ने उपस्थित लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया–

वो समय लौट कर नहीं आता,
हर दिशा, हर पहर से नहीं आता।
याद, यादें तो आ जाती हैं,
आदमी लौट कर नहीं आता।

इन पंक्तियों के माध्यम से उन्होंने जीवन के महत्व का भावपूर्ण संदेश दिया। उनकी प्रस्तुति ने लोगों को स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने और लापरवाही से बचने की प्रेरणा दी। इसके पश्चात आयोजित जागरूकता रैली में कॉलेज की प्राचार्य डॉ. निमिता मनोचा, शिक्षण स्टाफ, विद्यार्थी, आशा कार्यकर्ता एवं स्कूली विद्यार्थियों ने नारों के माध्यम से ग्रामीणों को जागरूक किया। ग्राम पंचायत कालाकुंड के सरपंच श्री शिव प्रसाद दुबे ने आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से ग्रामीणों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ेगी। उन्होंने कॉलेज के ग्रुप एडवाइजर श्री अरुण एस. भटनागर का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने इस अभियान के लिए दूरस्थ वनवासी क्षेत्र कालाकुंड का चयन किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. प्रीतेश पालीवाल एवं सह-संयोजक डॉ. गौरी बरास्कर रहे।

# आर्थिक रूप से कमजोर 24 छात्राओं को 2.28 लाख रुपये से अधिक की छात्रवृत्ति वितरित

**इन्दौर।** शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, किला भवन, इंदौर में सोमवार को Gen-Z करियर संवाद कार्यशाला', विशाल भगत चैरिटेबल ट्रस्ट छात्रवृत्ति वितरण समारोह तथा लघु उद्योग भारती के साथ हुए समझौता ज्ञापन (एमओयू) के अंतर्गत प्रोत्साहन प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। प्राचार्य डॉ. बी.डी. श्रीवास्तव के संरक्षण एवं प्रशासनिक अधिकारी डॉ. वी.पी. बैरागी के मार्गदर्शन में स्वामी विवेकानंद करियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं को करियर के नए अवसरों, तकनीकी बदलावों और रोजगार की संभावनाओं से अवगत कराने के साथ ही उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करना था। इस अवसर पर आर्थिक रूप से कमजोर छात्राओं को उच्च शिक्षा जारी रखने के लिए छात्रवृत्ति भी प्रदान की गई। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. बी.डी. श्रीवास्तव ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति में अपनी विशिष्ट प्रतिभा, क्षमता और अभिव्यक्ति होती है। छात्राओं को दूसरों की नकल करने अथवा उनके जैसा बनने के बजाय अपनी मौलिक पहचान विकसित करनी चाहिए। उन्होंने मोबाइल फोन एवं सोशल मीडिया के उपयोग के संदर्भ में स्वयं की पहचान और अभिव्यक्ति के महत्व को समझाया। उपमा और रूपक के उदाहरणों के माध्यम से उन्होंने कहा कि छात्राएं दूसरों से प्रभावित होने के बजाय अपनी प्रतिभा को पहचानें और आत्मविश्वास के साथ अपनी अलग पहचान स्थापित करें।



# कला, फैशन, संगीत और मनोरंजन का संगम होगा मध्य प्रदेश आर्ट फेस्टिवल 5.0

इंदौर समाचार प्रतिनिधि। मध्य प्रदेश स्थापना दिवस पर कलास्तंभ की ओर से मध्य प्रदेश आर्ट फेस्टिवल सीजन 5.0 एवं प्रोजेक्ट ई-टाइगर मूवमेंट के पोस्टर का विमोचन किया गया।

आयोजन की शुरुआत खजराना गणेश मंदिर में दर्शन और पूजा-अर्चना के साथ हुई, जहाँ दोनों अभियानों का निमंत्रण श्री गणेश के चरणों में अर्पित किया गया। इसके बाद ऐतिहासिक गांधी हॉल में पोस्टर विमोचन समारोह हुआ।

महोत्सव का पांचवां संस्करण 22, 23 और 24 जनवरी 2027 को गांधी हॉल में होगा। तीन दिन के इस उत्सव में कला, संस्कृति, साहित्य, संगीत, नृत्य, रंगमंच के साथ फैशन, खानपान और मनोरंजन का संगम देखने को मिलेगा।

महोत्सव में 30 से अधिक क्रिएटिव वर्कशॉप, लाइव आर्ट सेशन, कला प्रदर्शनियां, टॉक शो, आर्टिस्ट मीट-अप और अवॉर्ड समारोह होंगे। आर्ट एवं हैंडीक्राफ्ट बाजार, कविता पाठ, थिएटर, लोक संगीत, फैशन शो, फूड एक्सपीरियंस और लकी ड्रॉ भी आकर्षण रहेंगे। डांस, पेंटिंग, मेहंदी और रंगोली प्रतियोगिताओं में विजेताओं को 11-11 हजार रुपये के नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।



इसी अवसर पर ई-वेस्ट से आर्ट, आर्ट से जागरूकता की अवधारणा पर प्रोजेक्ट ई-टाइगर मूवमेंट की शुरुआत की गई। नागरिकों से पुराने माउस, कीबोर्ड, चार्जर जैसे ई-वेस्ट को अभियान से जोड़ने की अपील की गई है। अब तक 500 किग्रा से अधिक ई-वेस्ट एकत्र कर 300 लोगों और 50 संस्थानों को जोड़ा जा चुका है।

कलास्तंभ की संस्थापक सपना कटफर और निदेशक पुष्कर सोनी ने बताया कि यह आयोजन कलाकारों को मंच देने के साथ कला को आम लोगों से जोड़ने का प्रयास है। प्रवेश निःशुल्क रहेगा।